गुजरात विद्यापीठ ग्रंथावलि पु० – १०७

जंगलमें मंगल

[रॉबिन्सन क्रूसोकी आपबीती]

लेखक
मगनभाई प्रभुदास देसाई
अनुवादिका
निर्मला पटवीकर

गुजरात विद्यापीठ
अहमदाबाद-१४

निवेदन

रॉबिन्सन क्रूसोकी यह कहानी मैंने बहुत पहले वाचनमालामें एक पाठके रूपमें लिखी थी। प्रौढो, नये सीखनेवालों और बालकोंके लिये भी यह एक अच्छी पढनेके काबिल किताब हो सकेगी, यह मानकर इसको समाजशिक्षा ग्रथमालामें छापनेका विचार किया। ऐसा करते समय उसको फिरसे देखकर और कुछ सुधार करके तथा उसके प्रकरण बनाकर कहानीको ठीक किया है।

मूल अंग्रेजी कथा एक बडी पुस्तक है। पाठकोंको यह कथा बहुत छोटी लगेगी। इसमें कितने ही मनोरजक प्रसग जोडनेके काबिल है। लेकिन समाजशिक्षाके लिये इस तरहकी किताबोंकी पृष्ठसख्या निश्चित होनेके कारण कितने ही प्रसग इसमें जोडे नही है।

किताबमें चित्र भी काफी दिये है। इससे पृष्ठ-मर्यादासे जो कमी लगती है वह पूरी हो जायेगी। ये चित्र उपलब्ध सामग्रीमें से लिये है। इसके लिये इस सामग्रीवालोका मै आभारी हूं।

रॉबिन्सन क्रूसोकी कथा जगत्साहित्यमें एक अनोखी चीज है। यूरोपकी सभी भाषाओंमें इसका अनुवाद किया गया है। दूसरी भाषाओंमें भी इसका अनुवाद जरूर हुआ होगा।

इसकी वस्तु हमेशा रस पैदा करती रहनेवाली है। मानवजीवनका लुत्फ मनुष्यके पुरुषार्थमें ही है। क्रूसो लाचारीसे बिलकुल आदि सामाजिक स्थितिमें पड गया। उसमेंसे किस तरह उसने जगलमें मगल किया यह लेखकने बडी सरलतासे बढती हुई कथाके रूपमें दिखाया है। इसके लिये उसने १७वी सदीकी विलायतकी समाजकी स्थिति भूमिकाके तौरपर ली है। यह होते हुए भी वह इसे सर्वकालीन दिलचस्प कथा बना सका है। इससे लेखककी अपूर्व शक्तिकी पहचान होती है।

लेखकका नाम है डेनियल डिफो। उसका सक्षिप्त परिचय इसके बाद दिया है।

आशा है यह किताब पाठकोंको अच्छी लगेगी।

अपने मत पर डटा रहा। इस मजाका परिणाम उसके लाभमें ही रहा। रॉबर्ट हार्ले नामके मशहूर मुत्सद्दीके बीचमें पडनेसे आखिरकार उसका छुटकारा हुआ।

छूटनेके बाद उसने 'रिव्यू' नामका एक साप्ताहिक शुरू किया। उसने बहुतसी पुस्तकें और व्यंगकथायें वगैरा लिखीं। लेकिन वे सब बहुत मशहूर नहीं हुईं। साठ सालकी उम्रमें लिखी हुई किताब, 'रॉबिन्सन क्रूसो' से ही वह दुनियामें मशहूर हुआ। इस पुस्तककी भाषा सादी, ओजस्वी और चलती हुई होनेके कारण यह अंग्रेजी साहित्यमें मशहूर हुई है।

दुनियाकी जुदी जुदी भाषाओंमें उसका अनुवाद हुआ है।

डेनियल डिफोकी मृत्यु १७३१ में हुई।

अनुक्रमणिका

जंगलमें मंगल

[रॉबिन्सन क्रूसोकी आपबीती]

१

साहसकी धुन

ई. सन् १६३२मे इग्लैंडके यार्क शहरमें एक अच्छे सुखी घरमें मेरा जन्म हुआ। हम तीन भाई थे। उनमेसे मैं ही अकेला जिन्दा रहा, इसलिये आप समझ सकेंगे कि मेरे माँ-बापको मैं कितना प्यारा हूँगा।

उस जमानेमें मिल सकती थी उतनी पूरी तालीम मेरे पिताने मुझे दी। उनका विचार मुझे वकील बनानेका था। लेकिन समझमें नही आता किसलिये मुझे बचपनसे ही समुद्रके सफ़रकी ख्वाहिश थी।

मेरे पिताजीको यह विचार ज़रा भी पसद नही था। इसलिये वे मुझे नादान समझकर बहुत बार समुद्रके दुःख और अस्थिर जीवन तथा कठिनाइयोकी बाबत समझाते, और आखिरमे गद्‌गद होकर कहते, 'बेटा, अब हम दोनों बूढे हो गये हैं, तुम अपने बूढ़े माँ-बापके लिये ही यह पागलपन छोड़ दो।'

इसलिये एक साल मैंने निश्चय किया कि ऐसा साहस तो मैं नही करूँगा। लेकिन मेरा मन ज्यादा देर तक क़ाबूमें न रह सका।

ो मांगूंगा और कहूंगा कि अब कभी भी आपकी
उल्लंघन नहीं करूंगा। लेकिन लंडन अच्छी
ंचनेके बाद, वहांका बंदरगाह और वहां आने-
जहाजोंकी धमाल देखकर यह सब मैं भूल गया
की मुसाफिरीका मौका देखकर मैं अपनी पुरानी
ा गया।

नसे दूर अफ्रीकामें व्यापार करने जानेवाले एक
सफरके लिये जानेका मैंने इन्तजाम किया और
मेरी पहली मुसाफिरी शुरू हुई। इस तरह
दफा अफ्रीकाका सफर करनेसे मैं तजुर्बेकार मल्लाह
ा। इस तरह मैं अफ्रीकाका सफर करने लगा।
ाने कि मेरे नेक माता-पिता इस सारे समय मेरे
ा दुःखी हुए होंगे!

२

किसान बना

फ्रीकाके मेरे एक सफरमें मैं मूर लोगोंके हाथमें
ा। वे मुझे गुलामके तौरपर ले गये। मेरा मूर
भला आदमी था। लेकिन गुलामी क्या भलमन-
बर्तावसे सही जा सकती है? मुझे उससे छूटना था।
एक दिन अच्छा मौका मिल गया। सेठके आदमी
धर उधर थे। यह देखकर सेठकी ही एक किश्ती
मैं बंदरगाहसे समुद्रकी ओर चला गया। मेरी

खुशकिस्मतीसे रास्तेमें मुझे ब्राज़ील जानेवाला एक जहाज मिल गया। उसमें बैठकर मैं ब्राज़ील पहुँचा।

ब्राज़ीलमें पोर्तुगाली बसने लगे थे। मैं उनकी पनाहमें पहुँच गया, और उनकी तरह ही रहने लगा।

पोर्तुगीज लोगोंके साथ मेरा अच्छा मेल हो गया। उनकी तरह मैं भी खेती करने लगा और कुछ अर्सेके बाद मैं एक अच्छा किसान बन गया। धीरे धीरे मेरा खेतीका काम इतना बढ़ा कि मुझे दो तीन नौकर रखनेकी ज़रूरत पड़ी। लेकिन मेरे मूल स्वभावमें ही सुख नहीं था। इसलिये यहाँ चारेक साल स्थिर रहनेके बाद फिर मुझे सफ़र पर जाना हुआ।

एक दिन मेरे तीन पड़ोसियोंने मुझसे विनती की, 'भाई, हमारा एक काम क्या आप नहीं करेंगे? आप अफ्रीकाकी हर रोज़ जो रसिक बातें करते हैं इससे पता चलता है कि आप वहाँके अच्छे जानकर हैं। हम आपको जहाज वग़ैराका सब इन्तज़ाम कर देंगे। वहाँ जाकर हमारे लिये आप ग़ुलाम नहीं ले आयेंगे? उनमेंसे आधे हम आपको दे देंगे।'

यह सुनकर मैं ललचाया। इस लुभावनी बातमें मैं फँसे बिना न रह सका। और चार साल स्थिर रहनेके बाद मैं फिरसे समुद्री सफ़रके लिये रवाना हुआ। उस दिन ई. सन् १६५९ के सितम्बरकी पहली तारीख थी। आठ

साल पहले इसी दिन मैं घरबार और माता-पिताको छोड़कर हल बंदरगाहसे रवाना हुआ था। तबकी निस्बत अबके मेरे ग्रह ज्यादा प्रतिकूल निकले!

४

जहाज तूफ़ानमें

सफरके शुरूमें पंद्रह-एक दिन तो सब ठीक रहा। जरा गरमी ज्यादा लगती थी, लेकिन हवा बहुत अच्छी थी। इसके बाद फिर हमारे दुःखके दिन शुरू हुए।

एक दिन बड़ा भारी तूफान आया। बारह दिन तक वह रहा! वह इतना जोरदार और भयंकर था कि हम उसके सामने कुछ भी नहीं कर सकते थे। हमारे जहाजको उसमें बहनेके सिवा और कुछ चारा न था।

इस तरह हम खुले समुद्रमें बह रहे थे। इतनेमें एक दिन हमारेमेंसे एकने खुशीसे आवाज लगाई, 'जमीन!'

तूफान हमें जमीनकी ओर ले आया। लेकिन उसने हमारे लिये कुछ और ही सोचा था।

यह आवाज हमने पूरी तरह सुनी भी नहीं थी, कि इतनेमें हमारा जहाज रेतमें बुरी तरह धँस गया। तूफान तो कह रहा था कि अब मैं ही मैं हूँ। पहाड़

जब मैं होश में आया तब मुझे पता चला कि जलडमरू में अकेला ही रेतीले किनारे पड़ा हुआ हूं और ज़िन्दा हूं। इसलिये मैंने ईश्वर का उपकार माना।

जैसी लहरें गर्जना कर रही थी । धँसे हुए जहाजपर वे हथोड़ेकी तरह चोट लगाने लगी । जहाजका नाश करनेके लिये वे कितना समय लेंगी, यही देखना था। जहाजके साथ ही वे लहरें हमारा भी कीमा कर देंगी –यह हमें विश्वास हो गया। खुले समुद्रमें बह जानेसे हम बच गये थे; इतना ही नहीं जमीन सामने दिखाई दे रही थी, लेकिन वह नजदीक नहीं थी।

हमारी जीवन-नौका इस तरह बीचमें ही रुक गई थी! जहाजके साथ हमारी मृत्यु भी दिखाई दे रही थी। कप्तानने सोचा कि इस नाश होनेवाले जहाजमेंसे भाग चलें तो ही हम शायद बच सकें।

हमारे जहाजपर एक नाव थी। जैसे तैसे उसको हमने पानीमें डाला और हम सब उसमें कूद पड़े। तूफान तो जारी ही था। लहरोंके साथ लड़ते और टकराते हमने तो काफ़ी फ़ासला काटा। लेकिन हमारी क़िस्मत चार क़दम आगे ही खड़ी थी। एक बड़ी लहरने हमारी नावको उलट दिया।

जैसे टोकरेके उलटनेसे नारंगियाँ बिखर जाती हैं इसी तरह हम सब पानीमें बहने लगे। बादके मेरे अनुभवका वर्णन करना शक्य नहीं। कान, नाक और आँखोंमें ही नहीं, पेटमें भी पानी भर गया। मैं बेहोश हो गया। लेकिन मेरा नसीब इतना अच्छा था कि धक्के देते देते लहरोंने मुझे बेहोश हालतमें किनारेपर फेंक दिया। उस हालतमेंसे

जब मैं होशमें आया तब मुझे पता चला कि जहाजमेंसे मैं अकेला ही लहरोंमें किनारे फेंका गया हूं और बचा हूं। इसलिये मैंने ईश्वरका उपकार माना ।

लेकिन अब जमीनपर बचना भी सरल नही था
शायद पहली बार मेरी नजर खुद अपने ही ऊपर पड़ी।
ऊपर आकाश, नीचे जमीन और सामने पानी, इसके सिवा
मेरे पास और कोई न था। मेरे कपड़े भी भी गे हुए थे।
जेबमे थोड़ा तम्बाकू, चाकू और चिलम थी। यही मेरा
इस दुनियामें सर्वस्व था!

अब मुझे प्यास लगी। मुझे लगा कही कोई नदी-
नाला समुद्रमें गिरता होगा; वह मिल जाय तो मीठा
पानी मिले। खुशकिस्मतीसे वह मिल गया। पेट की खानेकी
और पानीकी दोनों जगह पानीसे ही भरकर मैं आगेकी
चिंता करने लगा।

मैं अकेला था। कही भी बस्ती नजर नही आती
थी। इसलिये मैंने मान लिया था कि किसी जगली
प्राणी या आदमीके हाथों ही अब मेरी मृत्यु हो गी बाकी
रही है। मगर इससे हाथ पर हाथ रखकर थोडे ही
बैठा जाता है! रक्षणके लिये एक डाली तोड़कर मैं ने उसका
डंडा बनाया। हिंसक पशु मुझे मार न डालें इस लिये मैंने
तय किया कि ठीक लगे या न लगे रात तो पेड़ पर ही

बितानी होगी। जब रात हुई तब एक घना पेड ढूंढकर उमपर ही मैंने मारी रात बिताई।

सुबह उठा तब मैं ताजा हो गया था और मेरा मन स्वस्थ था। सामने समुद्र शांत सरोवर जैसा था।

लेकिन यह क्या? मेरा वह जहाज़ — शायद रातके ज्वारसे — किनारेके नजदीक आ गया था! मुझे हुआ, 'हे भगवान, तो क्या बचनेके नामसे हम नावमें मरनेके लिये ही बैठे थे!'

५

अनजान प्रदेशमें

समुद्रमेसे जैसे तैसे जान बचाकर जमीन तो देखी, लेकिन अब ज़मीनपर बचना भी सरल नहीं था। ज़िन्दगीमें शायद पहली बार मेरी नजर खुद अपने ही ऊपर पड़ी। ऊपर आकाश, नीचे ज़मीन और सामने पानी, इसके सिवा मेरे पास और कोई न था। मेरे कपड़े भी भीगे हुए थे। जेबमें थोड़ा तम्बाकू, चाकू और चिलम थी। यही मेरा इस दुनियामें सर्वस्व था!

अब मुझे प्यास लगी। मुझे लगा कहीं कोई नदी-नाला समुद्रमें गिरता होगा; वह मिल जाय तो मीठा पानी मिले। खुशकिस्मतीसे वह मिल गया। पेटकी खानेकी और पानीकी दोनों जगह पानीसे ही भरकर मैं आगेकी चिंता करने लगा।

मैं अकेला था। कहीं भी बस्ती नज़र नहीं आती थी। इसलिये मैंने मान लिया था कि किसी जंगली प्राणी या आदमीके हाथों ही अब मेरी मृत्यु होनी जा रही है। मगर इसमें हाथ पर हाथ रखकर थोड़े ही बैठा जाता है! रक्षणके लिये एक डाली तोड़कर मैंने उसका डंडा बनाया। हिंसक पशु मुझे मार न डालें इसलिये मैंने तय किया कि ठीक लगे या न लगे रात तो पेड़पर ही

बितानी होगी। जब रात हुई तब एक घना पेड़ ढूंढकर उमपर ही मैंने मारी रात बिताई।

सुबह उठा तब मैं ताजा हो गया था और मेरा मन स्वस्थ था। सामने समुद्र शान्त सरोवर जैसा था।

लेकिन यह क्या? मेरा यह जहाज — शायद रातके ज्वारसे — किनारेके नजदीक आ गया था! मुझे हुआ, 'हे भगवान, तो क्या बचनेके मार्गमें हम नावमें मरनेके लिये ही बैठे थे!'

लेकिन बीती हुई बातपर समय क्यों लगाया जाय? उसके बारेमें मन ही मन रोनेसे क्या हो सकता था? एक एक क्षण मेरे लिये सोनेके बराबर क़ीमती था। 'जान बची लाखों पाये।' मुझे जिन्दा रहना था। इसके लिये क्या किया जाय यह सीधा सवाल मेरे सामने खड़ा था। इसलिये बीती हुई बातोंका विचार छोड़कर मैंने जहाजपर जानेका विचार किया। मैं दो दिनका भूखा था। मुझे आशा थी कि वहाँ कुछ न कुछ खानेको मिलेगा।

समुद्रमें भाटेका सहारा लेकर मैं कपड़े उतारकर कूद पड़ा। तैरते तैरते जहाजपर पहुँचा। खुशकिस्मतीसे एक रस्सेका टुकड़ा लटक रहा था, उसको पकड़कर मैं जहाजपर चढ़ गया। पहले मैं कोठारमें पहुँचा। जरा सोचें कि वहाँ खूब सूखे बिस्किट देखकर मुझे कितना आनद हुआ होगा! खानेके लिये थोड़े बिस्किट जेबमें डालकर मैं जहाजकी पूरी जाँच करने लगा। जहाजमें क्या क्या बचा है यह देखनेमें व्यर्थ समय बिताना मेरे लिये मुमकिन नहीं था। मैंने निश्चय किया कि थोड़े दिन तो इस जहाज परसे जरूरी सामान जमीनपर ले आनेमें खर्च करने होंगे। लेकिन सामानको मेरे नये वतनके किनारे कैसे लाया जाय?

जहाजपर थोड़े तख्ते, रस्सियाँ, टूटे हुए लकड़ीके डंडे और बादबान थे। उनमेंसे मैंने अपने कामके लिये एक बेड़ा बनाया, और ले जाया जा सके- इतना सामान

उसपर लादा। लादा हुआ बेडा मैं खेता खेता अपने नये घरकी ओर ले चला।

इस तरह अपने वतनमें जरूरी मालकी मैंने आयात शुरू की। इसलिये सोचा कि इस मालको उतारनेके लिये बंदरगाह जैसी जगह चाहिये। उसके लिये मैं अनुकूल जगह ढूंढने लगा। उसकी खोजमें एक खाडी मुझे मिल गई। उसमें मैं अपना बेड़ा ले गया। वहाँ मुझे एक दहाना मिल गया। उसे ही मैंने अपना बंदरगाह बनाकर वही अपना सामान उतार दिया। इतना करनेमें मुझे कितनी ही मुसीबतें झेलनी पड़ीं। एक बार तो मेरा

वेडा इतना झुक गया कि वह उलटते उलटते बचा। लेकिन इन सब मुश्किलोंका सामना करनेमें ही मेरा बचाव था ।

६

घर बसाया

अपने नये वतनमें बंदरगाहकी व्यवस्था की और वेड़ेकी मददसे जहाजपर से सामान लाने लगा। लेकिन उसे रखना कहाँ? और मैं भी कहाँ रहूँ? हर रोज थोड़े ही पेड़पर सोया जाता है? अब मैं इसकी चिंतामें पड़ा।

पहले खेपमें मैं बहुत ज़रूरी चीजें लाया था। उनमें खानेपीनेका सामान, बढ़ईके औज़ार और कपड़े थे। इसके सिवा दो बंदूकें और कुछ बारूद भी थी।

बंदूक कंधेपर रखकर मैं रहनेकी जगह ढूंढने निकला। पहले मैं एक पहाड़ी पर चढ़ा। चारों ओर नज़र दौड़ाकर मैंने देखा कि, मैं एक टापू पर हूँ। वहाँ मुझे कही भी कोई आदमी नही दिखाई दिया। पहाड़ीके एक तरफ़ एक गुफा जैसी थी और उसके मुंहके आगे थोड़ी सपाट जगह थी। मैं वहाँ पहुँचा। मुझे यह जगह रहनेके लिये अच्छी लगी। गुफाके मुंहके पास मैंने एक तंबू लगाया। तंबूके एक ओर पहाड़ था, उसको छोड़कर बाकी सब तरफ़ मैंने लकड़ीके डंडोंका डबल अहाता बना

दिया । अदर जानेके लिये अहातेपर चढकर ही जाना रखा । उसके लिये एक मीढी वनाई । अदर जाकर मैं अपनी सीढी खीच लेता था, जिससे मेरे किलेमें फिर कोई न आ सकें ! इस तरह मैंने अपने नये वतनमें रहने लायक घर वना लिया ।

[illegible]
लेकिन इन सब मुश्किलोंका सामना करनेमें ही मेरा बचाव था ।

६

घर बसाया

अपने नये वतनमें बंदरगाहकी व्यवस्था की और बेड़ेकी मददसे जहाजपर से सामान लाने लगा । लेकिन उसे रखना कहाँ ? और मैं भी कहाँ रहूँ ? हर रोज थोड़े ही पेड़पर सोया जाता है ? अब मैं इसकी चिंतामें पडा ।

पहले खेपमें मैं बहुत जरूरी चीजें लाया था । उनमें खानेपीनेका सामान, बढ़ईके औजार और कपड़े थे । इसके सिवा दो बंदूकें और कुछ बारूद भी थी ।

बंदूक कंधेपर रखकर मैं रहनेकी जगह ढूँढने निकला । पहले मैं एक पहाड़ी पर चढ़ा । चारों ओर नजर दौड़ाकर मैंने देखा कि, मैं एक टापू पर हूँ । मुझे कहीं भी कोई आदमी नहीं दिखाई दिया । एक तरफ एक गुफा जैसी थी और उसके थोड़ी सपाट जगह थी । मैं वहाँ पहुँ रहनेके लिये अच्छी लगी । गुफाके लगाया । तंबूके एक ओर बाकी सब तरफ मैंने

दिया। अंदर जानेके लिये अहातेपर चढ़कर ही जाना पड़ता। उसके लिये एक सीढ़ी बनाई। अंदर जाकर मैं अपनी सीढ़ी खींच लेता था, जिससे मेरे किलेमें फिर कोई न आ सके। इस तरह मैंने अपने नये वतनमें रहने लायक घर बना लिया।

ड़ा इतना झुक गया कि वह उलटते उलटते बचा।
किन इन सब मुश्किलोंका सामना करनेमें ही मे
चाव था।

६

घर बसाया

अपने नये वतनमे बंदरगाहकी व्यवस्था की और
ंकी मददसे जहाजपर से सामान लाने लगा। लेकिन उसे
ाना कहाँ? और मैं भी कहाँ रहूँ? हर रोज थोड़े ही
पर सोया जाता है? अब मैं इसकी चितामें पड़ा।

पहले खेपमें मैं बहुत जरूरी चीजें लाया था। उनमें
नेपीनेका सामान, बढ़ईके औजार और कपड़े थे। इसके
ा दो बंदूकें और कुछ बारूद भी थी।

बंदूक कंधेपर रखकर मैं रहनेकी जगह ढूंढने
ला। पहले मैं एक पहाड़ी पर चढा। चारों ओर
र दौड़ाकर मैंने देखा कि, मैं एक टापू पर हूँ। वहाँ
कहीं भी कोई आदमी नहीं दिखाई दिया। पहाड़ीके
तरफ़ एक गुफा जैसी थी और उसके मुँहके आगे
ा सपाट जगह थी। मैं वहाँ पहुँचा। मुझे यह जगह
के लिये अच्छी लगी। गुफाके मुँहके पास मैंने एक तंबू
ा। तंबूके एक ओर पहाड़ था, उसको छोड़कर
सब तरफ़ मैंने लकड़ीके डंडोंका डबल अहाता बना

दिया । अंदर जानेके लिये चट्टानेपर चढ़कर ही जाना रखा । उसके लिये एक सीढ़ी बनाई । अंदर जाकर मैं अपनी सीढ़ी खींच लेता था, जिससे मेरे किलेमें फिर कोई न आ सके ! इस तरह मैंने अपने नये वतनमें रहने लायक घर बना लिया ।

बेडा इतना झुक गया कि वह उलटते उलटते बचा। लेकिन इन सब मुश्किलोंका सामना करनेमें ही मेरा बचाव था।

६

घर बसाया

अपने नये वतनमें बंदरगाहकी व्यवस्था की और बेड़ेकी मददसे जहाजपर से सामान लाने लगा। लेकिन उसे रखना कहाँ? और मैं भी कहाँ रहूँ? हर रोज थोड़े ही पेड़पर सोया जाता है? अब मैं इसकी चिंतामें पडा।

पहले खेपमें मैं बहुत जरूरी चीजें लाया था। उनमें खानेपीनेका सामान, बढ़ईके औजार और कपड़े थे। इसके सिवा दो बदूकें और कुछ बारूद भी थी।

बंदूक कंधेपर रखकर मैं रहनेकी जगह ढूंढने निकला। पहले मैं एक पहाड़ी पर चढा। चारों ओर नजर दौड़ाकर मैंने देखा कि, मैं एक टापू पर हूँ। वहाँ मुझे कहीं भी कोई आदमी नहीं दिखाई दिया। पहाड़ीके एक तरफ़ एक गुफा जैसी थी और उसके मुँहके आगे थोड़ी सपाट जगह थी। मैं वहाँ पहुँचा। मुझे यह जगह रहनेके लिये अच्छी लगी। गुफाके मुँहके पास मैंने एक तंबू लगाया। तंबूके एक ओर पहाड़ था, उसको छोड़कर बाकी सब तरफ़ मैंने लकड़ीके डंडोंका डबल अहाता

या । अदर जानेके लिये अहातेपर चढ़कर ही जाना
गा । उसके लिये एक सीढ़ी बनाई । अदर जाकर मैं
पनी सीढ़ी खीच लेता था, जिससे मेरे किलेमें फिर कोई
आ सके । इस तरह मैंने अपने नये मकानमें रहने लायक
र बना लिया ।

मुश्किलका हल

अब मैं जहाज परसे जल्दी जल्दी सामान लाने लगा। जो मैं यह न करता तो क्या वहाँ कोई बाजार था जहाँसे मुझे कुछ मिलता? टूटा हुआ जहाज और टूटकर पानीमें कब बह जायेगा इसका भी कुछ भरोसा नही था।

एक दिन मैं जहाजपर गया। उसमेंसे घर ले जाने लायक़ चीज़ोंको ढूंढ़ते ढूंढ़ते मुझे रुपयोंकी थैली मिली। उसे देखकर मैं जोरकी हँसी रोक नही सका। इस निर्जन टापूमें ये बेचारे सिक्के मुझे किस कामके थे? एक कील यहाँ ज्यादा कीमती थी। इस निराशाके टापूसे किसी न किसी दिन सुधरी हुई दुनियामें जाना होगा, ऐसी अमर आशा मेरे अतरमें थी; इसलिये मैंने वे निकम्मे सिक्के भी साथ ले लिये।

ऐसी ही दूसरी एक विचित्र बात और कहूँ। जहाजपरसे मैं पहले जरूरतके लायक बंदूकें और तलवारें लाया था। बादमें मिली उतनी बंदूकें, तलवारें, और बारूद भी टापूपर ले आया। मैं अकेला था, इतनी सारी सामग्री मुझे किसलिये चाहिये? लेकिन सिक्कोंकी तरह उनके लिये नही कहा जा सकता। समयपर, रक्षाके लिये उनका उपयोग हो सकता था।

जहाजपरसे लाये हुए सामानके ढेरसे मेरे कमरे और गुफामें भीड हो गई। मुझे लगा अगर तख्ते हों तो अच्छा रहेगा। खानेपीनेके लिये मेज-कुर्सी न होनेसे मैं आरामसे खा भी नहीं सकता था। मैंने सोचा कि इस टापूपर लकड़ी तो बहुत है, चलो जरूरतकी चीजें बना लूं।

अब तक कभी बढ़ई-काम मैंने किया नहीं था। लेकिन जरूरत आदमीको क्या नहीं सिखाती? तख्ते चीरनेके लिये आरी चाहिये, वह मेरे औजारोंके साथ नहीं थी। कुल्हाडी मुझे मिल गई थी; उसे ले आया था। आरीका काम मैंने कुल्हाडीसे लिया। उससे पेड़के बड़े तनेको छील छील कर मैं तख्ते बनाने लगा। उसमें समय तो बहुत लगता था; लेकिन इस टापूपर मुझे और काम भी क्या था? मुझे जाना-आना भी कहां था? एक तनेको छील छील कर तख्ते बनाकर, उनमेंसे जैसी आई वैसी मैंने मेज-कुर्सी बनाई और तख्ते भी बना लिये। कीलें और हथौड़ी मुझे जहाजपरसे मिल गई थीं।

जहाजपरसे मैं स्याही, कलम और थोड़ी किताबें भी ले आया था। किताबोंमें बाइबल भी थी। पहले मैंने कभी बाइबल नहीं पढ़ी थी। निराशाके इस निर्जन टापूपर वह मुझे बहुत सान्त्वना और आशा देनेवाली किताब बन गई। किसी न किसी दिन ईश्वर मुझे पार उतारेगा, यह मेरी श्रद्धा बाइबल पढ़नेसे ही पक्की हुई। और अकेले-पनके इस जीवनमें मुझे जो डर-सा लगता था, वह भी

बाइबलने ही निकाल दिया। ईश्वर-प्रार्थना सचमुच मेरी जिन्दगीका आधार बन गई।

कलम और स्याही किसलिये लाया था? मुझे किसे चिट्ठी लिखनी थी? चिट्ठी तो मैं नहीं लिखता था, लेकिन जब तक स्याही रही तब तक मैं अपनी डायरी नियमित लिखता रहा। नई स्याही बनानेकी मेरी एक भी युक्ति सफल नहीं हुई, इसलिए इस लिखनेके कामको मुझे छोड़ना पड़ा।

मैंने अपने लिये एक कामचलाऊ पचांग भी बनाया था। टापू पर आनेके बाद थोड़े ही दिनोंमें जिस जगह मैं किनारेपर आ पडा था वहाँ बडे अक्षरोंमें तख्ते पर खोदकर लिखा : '३० सितम्बर, १६५९ के दिन मैं इस जगह आया।'

इस तख्तेका खंभा मेरा पचांग था। हर रोज मैं इस खंभेकी यात्रा करता और उस पर चाकूसे एक निशान करता। सातवाँ निशान मैं बडा करता। और जब महीना पूरा हो जाता तब लंबा निशान करता। मैंने अपने इस पचांगको आखिर तक जारी रखा।

इस तरह इस वीरान निवासमें मैं अपना घर सजाने लगा और मेरी नई दुनियाका सर्जन होने लगा।

८

मेरी छोटीसी नई दुनिया

अब मुझे इस टापूपर आये एक साल होने आया। जहाज परसे लाई हुई खुराकके अलावा मैं शिकार करने लगा था। टापू पर मुझे पक्षी, उनके अंडे, और बकरे-बकरियाँ मिलीं। एक किस्मके फल मिले, उनको मैं सुखाकर रखने लगा। थोड़े बिस्किट जहाज पर मिले थे, वे अब खत्म होने आये थे। इसी अर्सेमें एक दिन मैंने अपने तंबूके पास एक दो जौके पौधे उगे हुए देखे। मेरी

खुशीका ठिकाना न रहा। ईश्वरकी कैसी मेहरबानी है! यह मुझे यहां भी नही भूला — यह मुझे जरूर पार उतारेगा, ऐसी श्रद्धा मुझे हो गई। पौधेके एक दो बाल निकली। दाने पड़े, उनको सँभालकर रखकर, उनसे मैंने खेती शुरू की और धीरे धीरे बढ़ते बढ़ते एक साल चले इतना नाज मैं पैदा करने लगा। इस तरहमे वीरान जगहमें भी मैं अपनी रोटी कमाने लायक हो गया।

आपको लगता होगा कि बिना बीज नाज अपने आप और एकदमसे किस तरह उगा? मुझे बादमें उसका

खाना पकानेके लिये भगोने और लोटे-प्याले वग़ैराकी तो बात ही क्या थी ?

मेरे राज्यमें मिट्टी और लकड़ीकी तो कमी ही न थी । मैंने कुम्हार बननेका विचार किया ।

बचपनमें मैंने अपने गाँवके कुम्हारका चाक देखा था । लेकिन कभी मिट्टी या चाकके हाथ नहीं लगाया था । जिन्दगीमें पहली बार मैं कुम्हार बना ।

कितनी ही बार मैंने आकार बनाया और वह टूट गया । चाक तो यहां कहाँसे हो ? मुझे हाथसे ही जैसा बन सके वैसा आकार बनाना था । दो महीनों तक यह मेरी तोड़-फोड़ चली । आखिरमें दो बर्तन बने । उनका आकार और रूप कैसा होगा यह न पूछें । फिर भी उनका कुछ न कुछ नाम तो होना ही चाहिये, इसलिये मैं उनको घड़ा कहता था। वैसे तो यह रूप दुनियामें अनोखा ही था ।

इस तरहसे शुरू करनेके बाद मैंने हाँडी, प्याले वग़ैरा बहुत बनाये । जैसे जैसे हाथ बैठता गया मैं अच्छे बर्तन बनाता गया । आगे चलकर उनको पकानेकी कला भी मैंने ढूंढ निकाली । इस तरह बर्तनोंकी मेरी चिंता मिटी ।

अब मेरा घर काफी व्यवस्थित हो गया था । और खेतीके अलावा कुछ अच्छी चीजे बनाने, घर ठीक करने, वग़ैरा अनेक कामोमे मेरा दिन पूरा हो जाता था। एक

तरहसे कहा जाय तो मैं अपने टापूका राजा ही था। घरके कामसे कुछ समय भी बचाने लगा। इसलिये बीच बीचमें समय निकालकर मैंने अपने इस राज्य जैसे टापूको भी देख लिया।

बादमें मुझे एक नया काम सूझा। एक दफा एक साल मैं बीमार हुआ। घरमें पड़ा पड़ा खाली क्या करूँ? मुझे टोकरी बनानेकी इच्छा हुई। मेरे टापूमें सालमें दो फसलें होती थी। इसलिये अब नाज तो खूब होने लगा था। टोकरे-टोकरियाँ बनाऊँ तो नाज भरनेके काममें आयें यह भी इस कामको करनेका कारण था।

जब मैं छोटा था तब पुरानी दुनियामें झटझट टोकरी बनानेवालोंको मैं देखा करता था। अब मैं खुद यह काम करने लगा। पतली डालियाँ काटकर मैं उनसे टोकरी बनाने लगा। इस तरह जो पहली टोकरी बनी उसे देखकर मैं फूला नहीं समाया। फिर तो गरमीके खाली दिनोंमें हर साल जरूरतके मुताबिक मैं टोकरियाँ बना लेता।

नाज पीसनेके लिये चक्कीके लिये क्या किया जाय यह भी सवाल खड़ा हुआ। मजबूत लकड़ी ढूंढकर उसमेंसे जैसा आया वैसा ऊखल और मूसल मैंने बनाया। मैं उसमें नाज कूट कर अपना आटा बना लेता था; और जहाजपरसे एक जालीदार कपड़ा मिला था उसकी छलनी बनाई।

मेरे कपड़े भी अब कब तक चलते? वे अब फटने लगे। शिकारके चमड़े सुखाकर मैं उनका संग्रह करता रहा। उनमेंसे मुलायम चमड़ा देखकर मैंने चमड़ेका कोट, टोपी वगैरा कपड़े बना लिये। चमड़ेका एक छाता भी बनाया जो मुझे धूप और बरसात दोनोंमें काम देता था। आदि जमानेके इन कपड़ोंमें मैं कैसा दिखाई देता हूँगा? लेकिन वहाँ मेरे सिवा मुझे देखनेवाला भी कौन था! मुझे वे कपड़े और छाता बहुत ही अच्छे लगते थे, क्योंकि उनसे मेरा काम खूब चलता था। दूसरे मुझे मिल सकें ऐसा था ही नहीं।

८

निर्जनताथ मायी

इस तरह मेरा रहन-सहन जम गया । साल्हा-साल भी गुजारने पड़े तो भी मुझे कुछ मुश्किल पड़े ऐसा न

लगता था। सिर्फ एक ही बातका दुःख था कि मैं अकेला था। इसीलिये ईश्वरकी दी हुई जबान न दी हुईके बराबर थी। टूटे हुए जहाजमें एक कुत्ता ही जिन्दा बचा था। उसको मैं टापूपर ले आया था। इसलिये इस निर्जन स्थानमें उसने मेरा साथ दिया और मैंने उसका। वह ही एक मेरा साथी था। उसके अलावा टापूपर आकर मैंने एक तोता और एक बिल्ली पाली। वे मुझे टापूपर मिल गये थे। तोतेको मैंने अपना नाम 'बेचारा क्रूसो' बोलना सिखाया। वह यह बोलता तो सुनकर मैं खुश होता था। मेरे इन साथियोंसे मेरा अकेलापन मिटता था और मुझे कुछ शांति मिलती थी।

रोज सुबह-शाम प्रार्थना करना और बाइबलका पाठ करना यह मैंने नियम बना रखा था। यह भी मेरे लिये धैर्यकी दवा थी। फिर भी आदमियोंमें मैं अकेला था यह दु:ख तो था।

थोड़े साल बाद ईश्वरने मेरे पास एक आदमी-मित्र भी भेज दिया। वह मुझे फ़्राईडे (शुक्रवार) के दिन मिला था, इसलिये मैंने उसका नाम 'फ़्राईडे' रखा। सारी उमर वह वफ़ादार नौकरके तौर पर मेरे साथ रहा। यह आदमी पासके जंगली लोगोंके टापूका निवासी था। इस निर्जन टापू पर वह कहाँसे आया, मुझे किस तरह मिला, यह मेरे जीवनका एक स्वतंत्र और रोमांचक प्रकरण है।

कि यह क्या है । वे जंगली आदमी थे ।
खानेवाले आदमी दुनियाके इस भागमें रहते
जानता था । ये वे ही हैं और उस बँधे
मारकर मौज उड़ानेके लिये वे इस टापू
इसका मुझे विश्वास हो गया । इसलिये मैं
हो गया । आदमीका मास खानेका पाप मैं
देखनेके लिये तैयार नहीं था ।

वे नरभक्षक अपने शिकारको मारनेके
हुए । मैंने मनमें तय किया कि कुछ करना चा
मैंने गोली छोड़ी । उससे एक जंगली गिर गया
गोलीको वे शायद जानते ही न हों ! वे तो घ
मैंने दूसरी गोली छोड़ी और दूसरेको गिरा
शिकारको जिन्दा ही छोड़कर वे जान बचाकर

मेरे टापू पर यह घटना विचित्र समझी ज
उस बचाये हुए आदमीके पास गया । वह तो
घबरा रहा था, कि अब मैं उसको मारूँगा । ले
उसकी मुश्के छोड़ीं उससे वह समझ गया;
गद्‌गद हो गया और मेरे पाँव पड़ा । अभिनयकी
मेरा गुलाम होनेके लिये वह कहने लगा । इस
अपना फ्राईडे नौकर मिला । आदमी-साथीकी मेरी
ईश्वरने पूरी की ।

लेकिन इसके साथ मेरे राज्यमें एक नया
खड़ा हो गया । अब मेरे टापूके खिलाफ़ शत्रु
गये । वे जंगली आदमी इस टापूको आफत और

कि यह क्या है । वे जंगली आदमी थे । आदमीका मांस खानेवाले आदमी दुनियाके इस भागमें रहते हैं यह मैं जानता था । ये वे ही हैं और उस बँधे हुए आदमीको मारकर मौज उड़ानेके लिये वे इस टापू पर आये हैं, इसका मुझे विश्वास हो गया । इसलिये मैं तुरन्त तैयार हो गया । आदमीका मांस खानेका पाप मैं अपनी नज़रसे देखनेके लिये तैयार नहीं था।

वे नरभक्षक अपने शिकारको मारनेके लिये तैयार हुए । मैंने मनमें तय किया कि कुछ करना चाहिये; और मैंने गोली छोड़ी । उससे एक जंगली गिर गया। बंदूक-गोलीको वे शायद जानते ही न हों! वे तो घबरा गये। मैंने दूसरी गोली छोड़ी और दूसरेको गिरा दिया। अपने शिकारको जिन्दा ही छोड़कर वे जान बचाकर भागे।

मेरे टापू पर यह घटना विचित्र समझी जायगी। मैं उस बचाये हुए आदमीके पास गया । वह तो खुद ही घबरा रहा था, कि अब मैं उसको मारूँगा। लेकिन मैंने उसकी मुश्कें छोड़ी उससे वह समझ गया; अहसानसे वह गद्गद हो गया और मेरे पाँव पड़ा । अभिनयकी भाषामें मेरा गुलाम होनेके लिये वह कहने लगा । इस तरह मुझे अपना फ़ाईडे नौकर मिला। आदमी-साथीकी मेरी ज़रूरत ईश्वरने पूरी की ।

लेकिन इसके साथ मेरे राज्यमें एक नया सवाल खड़ा हो गया । अब मेरे टापूके खिलाफ़ शत्रु पैदा हो गये। वे जंगली आदमी इस टापूको जाफत और मौजशौककी

संरगाह मानते थे। फिर एक टुकडी आई उसको भी मार कर मैंने भगा दिया । उसमें शिकारके तौर पर फ्राईडेका ही एक रिश्तेदार आया था । इस तरह फ्राईडेको और मुझे एक और साथी मिला।

लेकिन उससे एक नई मुसीबत खड़ी हुई । मेरे टापूपर अब हमले होने लगे । आसपासके जंगली आदमियोंकी बस्तीकी जगह मैंने ले ली थी । उनके आदमियोंको मैंने मारा था । उनके कैदी मैंने ले लिये थे। उसका बदला लेनेके लिये वे टापूपर हमले करने लगे।

यह समझकर ही मैंने और फ़ाईडेने मिलकर हमारे घरके इर्दगिर्द फसील बना ली थी। फ़ाईडेके लिये एक नया घर भी बना लिया था। उस घरको भी मैंने अपने घरकी फसीलमें ले लिया था। इन हमलोंका सामना करनेके लिये जहाजपरसे लाये हुए हथियार मुझे बहुत कामके साबित हुए। फ़ाईडेको बंदूक भरना और उसका उपयोग करना मैंने सिखा दिया। इससे हम दोनों अपने दुश्मनोंसे अच्छी तरह टक्कर ले सके! वे तीरकमानवाले हम गोलीवालोंको कैसे हरा सकते थे? फसीलके पीछेसे हम उनकी बड़ी संख्याको अच्छी तरहसे हरा देते थे।

लेकिन यह सचमुच मुसीबत ही थी! इस तरह तो आरामसे सोया भी कैसे जाये? राजाका दुःख राजा ही जाने। मुझे तो खूब लगने लगा कि इस नयी दुनियासे छुटकारा मिले तो अच्छा।

एक दफा तो मैंने पागलों जैसा ही विचार किया: मैं जमीनपर एक बड़ी नाव बनाने लगा। इस विचारसे कि उसमें बैठकर फिरसे पुरानी दुनियामें चला जाऊँ। एक बड़ा पेड़ गिराकर उसके तनेको बीचमेंसे खोखला करके नाव बनाई। लेकिन उसको पानीमें कैसे ले जाया जाय? मैंने नाव तक नहर खोदनेका विचार किया। यह सब सिर्फ पागलपन लगेगा; लेकिन इस टापूकी कैदसे छूटनेके लिये मुझे यह पागलपन नहीं लगता था।

छूटनेकी मेरी आशा आखिरमें क़ामयाब हुई! इस खुशखबरीसे मैं अपनी आपबीती पूरी करूँगा।

मडग़ास्कर, हिंद, चीन वगैरा देशोंका सफर करनेके अलावा में अपना पुराना टापू भी देख आया ।

अब ई. सन् १७०५ का साल है । यानी में ७३ सालका हुआ हूँ । अब तो एक ही और आखिरी लंबे सफ़रका इन्तजार कर रहा हूँ, और वह है ईश्वरके घरका। इसमें मुझे किसी तरहकी अशांति या घबराहट नहीं है । मुझे आशा है कि शांति और संतोषके साथ में यह आखिरी सफ़र करूँगा ।